**विश्वास के कार्यः अपने विश्वास के दावे के अनुसार जीना**

विश्वास कार्य करता है

डॉ. डेविड प्लैट

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ याकूब 2 निकालें। याकूब 2—मेरी मूल योजना याकूब 2:14—26 को एक ही सन्देश में प्रचार करने की थी, और योजनाएँ बदल गई हैं। इस पूरे परिच्छेद को एक ही सन्देश में समाप्त करने का कोई मार्ग नहीं है, इसलिए हम इसके लिए अगले तीन सन्देशों को लेंगे, और इस प्रचार में हम केवल पद 19 तक जायेंगे। और यह भी थोड़ा अधिक है। इस पुस्तक से यात्रा करके आप पहले की तरह नहीं जी सकते हैं। आप इसे केवल सुनने वाले नहीं हो सकते हैं। आरम्भ में ही वह कहता है, "सुनो मत, इसे करो। यदि तुम न करो तो तुम मसीहियत के मूल बिन्दू से चूक रहे हो, अतः इसे करो!" यही इस पद का सार है जिसमें हम आगामी दिनों में डुबकी लगाने वाले हैं।

अब मैं चाहता हूँ आप धीरज के साथ, इच्छापूर्वक मेरे साथ इस पद में से होकर चलें, क्योंकि यहाँ सच्चाईयाँ हैं। हम एक साथ तीन सत्यों में से होकर चलेंगे जिनके बारे में कई प्रकार की गलतफहमियाँ हैं, और अगले कुछ प्रचारों में भी ऐसा ही होगा। इन पदों पर अत्यधिक चर्चा, और वाद—विवाद किया गया है। इन पदों का शेष नये नियम की शिक्षा से क्या मेल है? अतः हमें सावधानी से उनमें से होकर चलना होगा, और इस प्रक्रिया में मुझे निश्चय है कि हम कुछ सत्यों को देखेंगे जो हमें चुनौती देंगे और हमारे जीवनों को बदल देंगे।

याकूब 2:14ः

> हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो इससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? यदि कोई भाई या बहन नंगे—उघाड़े हो और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो, और तुम में से कोई उनसे कहे, "कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो," पर जो वस्तुएँ देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे तो क्या लाभ? वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।

> वरन् कोई कह सकता है, "तुझे विश्वास है और मैं कर्म करता हूँ।"
>
> तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना तो दिखा; और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊँगा। तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है। दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।

हे परमेश्वर, हम मृत विश्वास पर नहीं टिकना चाहते हैं, और हम निश्चित रूप से शैतानी विश्वास पर भी नहीं टिकना चाहते हैं। हम मौलिक विश्वास चाहते हैं, जो आप पर विश्वास करे और आपके पीछे चले। विश्वास जो आपके सत्य को ग्रहण करे और आपके प्रेम को प्रतिबिम्बित करे। हम जानते हैं कि इस प्रकार विश्वास केवल आपके अनुग्रह द्वारा, आपकी ओर से उपहार के रूप में आता है। अतः हमारी प्रार्थना है कि अपने अनुग्रह से, अपने आत्मा के द्वारा, आप हमारे हृदयों को लें और हमारे अन्दर के विश्वास के प्रति हमारी समझ को खोलें। आज आप बहुत से लोगों को अपने विश्वास की ओर खींचें। और हमारी प्रार्थना है कि आपके द्वारा हमारे अन्दर उत्पन्न किए विश्वास से हम इस संसार में असाधारण कार्य करें। आपके नाम की खातिर हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

**सच्चाईयाँ...**

याकूब पद 14 में आरम्भ करता है, ठीक वहाँ जहाँ हमने पिछले प्रचार में छोड़ा था। याकूब अध्याय 2:12–13 में हमने देखा था यदि आपने अपने दिल में परमेश्वर की दया पाई है, तो आप अपने जीवन में परमेश्वर की दया को प्रतिबिम्बित करते हैं। और वह तस्वीर, विशेष रूप से पक्षपात और कंगालों की सहायता करने और उचित बात को प्राथमिकता न देने से संबंधित तस्वीर को वह इस परिच्छेद में लाता है तीन सत्य जिन्हें मैं चाहता हूँ कि हम देखें। और वे वास्तव में उसी यथार्थ पर पुनः बल देते हैं। इस पूरे परिच्छेद में हम देखेंगे याकूब उसी बात को बार–बार, अलग–अलग तरीकों से कहता है।

**हमारे हृदयों का विश्वास हमारे जीवनों के फल में प्रकट होता है**

पहला सत्यः <u>हमारे हृदयों का विश्वास हमारे जीवनों के फल में प्रकट होता है।</u> मैं कहूँगा, यह याकूब 2:14–26 का विषय है। इसे तीन बार दोहराया गया है–इस परिच्छेद के आरम्भ में, मध्य में, और अन्त में। पद 17 में लिखा है, *"वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।"* इसे रेखांकित करें। *"वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।"* फिर आप

पद 20 पर आते हैं और वहाँ लिखा है, *"पर हे निकम्मे मनुष्य, क्या तू यह भी नहीं जानता कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है।"* इसे रेखांकित करें। *"कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है।"* फिर आप अन्तिम पद, पद 26 पर आते हैं: *"अतः जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।"* इसे रेखांकित करें। *"वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।"* कर्म बिना विश्वास–मरा हुआ है। कर्म बिना विश्वास–मरा हुआ है। कर्म बिना विश्वास–मरा हुआ है।

अब विश्वास के मरे हुए होने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि यह बचाता नहीं। पद 14, क्या इस तरह का विश्वास बचाता है? और आशय है "नहीं।" यह विश्वास उद्धार नहीं करता है। यह धर्मी नहीं ठहराता, यह हमें परमेश्वर के सामने सही नहीं बनाता। इसमें कोई जीवन नहीं है। यह विद्यमान नहीं है। और यही मुख्य बात है, क्योंकि याकूब अपरिपक्व विश्वास की परिपक्व विश्वास से तुलना नहीं कर रहा है। वह नाममात्र के विश्वास की समर्पित विश्वास से तुलना नहीं कर रहा है। वह विश्वास की शून्य से–विश्वासहीनता से तुलना कर रहा है।

अब, इससे न चूकें, यह व्यक्ति विश्वास होने का दावा करता है, और यहाँ पद 14 में आरम्भ से यही तस्वीर है। इससे न चूकें। विश्वास होने का दावा करना संभव है, उद्धार वाले विश्वास के होने का दावा करना, और विश्वास बिल्कुल भी न होना। यह खतरनाक रूप से कपटी है।

मैं आपसे इसे सुनने का अनुरोध करता हूँ। विश्वास होने का दावा करना संभव है, उद्धार करने वाले विश्वास के होने का दावा करना, और यथार्थ यह है, तुम में विश्वास नहीं है, तुम में विश्वास नहीं है जो उद्धार करता है। तो आप कैसे जानते हैं? आप कैसे जान सकते हैं कि आप में विश्वास है? विश्वास जो उद्धार करता है? आप कैसे जान सकते हैं कि आप में विश्वास है? और याकूब कहता है फल को देखो। "मैं कर्म के द्वारा अपना विश्वास दिखाऊँगा।" विश्वास फल उत्पन्न करता है। फल के होने या न होने के आधार पर आप बता सकते हैं कि विश्वास है या नहीं। यह बिल्कुल वही है जो यीशु ने मत्ती 7 में कहा, *"उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है। इस प्रकार उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।"* (मत्ती 7:16–20). जब आप एक पेड़ पर सेब लटके देखते हैं तो आप कहते हैं, "वह सेब का पेड़ है।" आप कैसे जानते हैं? "उस पर सेब लगे हैं।" इतना सरल है। जो बाहर प्रकट है वह स्पष्ट करता है कि अन्दर क्या

है, अतः यदि आप फल देखते हैं, तो वह विश्वास का प्रमाण है। यदि कोई फल नहीं है, तो कोई विश्वास नहीं है।

विश्वास हमेशा फल उत्पन्न करता है। अब याकूब यह नहीं कह रहा है कि आपको उद्धार पाने के लिए विश्वास में कर्म को जोड़ने की आवश्यकता है। याकूब कह रहा है विश्वास कर्म उत्पन्न करता है—विश्वास से निकलता है। यह बहाव है। अतः आरम्भ से यही तस्वीर है। हमारे हृदयों का विश्वास हमारे जीवनों के फल से प्रकट होता है। अब यह सत्य दूसरे सत्य के लिए आधार तैयार करता है जो चौंकाने वाला है, जिसका याकूब उदाहरण देता है। हमारे दिलों का विश्वास हमारे जीवनों के फल से प्रकट होता है।

**वे लोग जो मसीही होने का दावा करते हैं लेकिन निर्धन साथी विश्वासियों की सहायता करने में असफल हो जाते हैं उन्होंने वास्तव में उद्धार नहीं पाया है**

यह इस परिच्छेद में अगला चरण है, जो वह बताता है, दूसरा सत्य वे लोग जो मसीही होने का दावा करते हैं लेकिन निर्धन साथी विश्वासियों की सहायता करने में असफल हो जाते हैं उन्होंने वास्तव में उद्धार नहीं पाया है। अब मैं जानता हूँ कि आप में से कुछ लोग मुझे सनकी समझेंगे। और कुछ लोग अभी से अपने मन में ईमेल सन्देश का प्रारूप तैयार कर रहे हैं, अतः एक पल के लिए मेरे साथ बने रहें। क्या याकूब 2:15—16 का बहुतायत से स्पष्ट सत्य नहीं है? इसके बारे में सोचें। *"यदि कोई भाई या बहन नंगे—उघाड़े हो और उन्हें प्रतिदिन के भोजन की घटी हो।"* (याकूब 2:15). जिसके पास शरीर को ढांपने के लिए पर्याप्त वस्त्र नहीं है, अपने चिथड़ों के साथ, वह आपके द्वार पर है। और उसके पास भोजन नहीं है। दिन के लिए भोजन नहीं है, भोजन के लिए कोई मार्ग नहीं है। वह भूख से मर रहा है। शर्मसार, ठण्डा, अभागा, और भूखा है, वह आपके द्वार पर खड़ा है, और आप उससे कहते हैं, "कुशल से जा।" शाब्दिक रूप में, "शान्ति से जा।" यह एक आशीर्वाद है जो आप तब कहते हैं या किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं जह वह जा रहा हो। "परमेश्वर तुम्हें आशीष दे। परमेश्वर तुम्हारे साथ रहे।" "गर्म रहो और तृप्त रहो।" अब नये नियम की मूल भाषा में इसके दो संभावित अनुवाद हो सकते हैं। एक अनुवाद, "अपने आप को गर्म और तृप्त रखो।" "अपने आ को गर्म और तृप्त रखो।" जैसे कि वे ऐसा कर सकते हैं। दूसरा अनुवाद है, "गर्म और तृप्त रहो," जैसे कि वे रहेंगे; जैसे कि वे अपने जीवन में ऐसा कर सकते हैं। तस्वीर यह है कि यह हास्यास्पद है। स्पष्टतः, याकूब कहता है, "उस व्यक्ति को इससे क्या लाभ? और याकूब यही कह रहा है कि ऐसा विश्वास इस व्यक्ति का उसकी जरूरत में उद्धार नहीं कर सकता, इस व्यक्ति की जरूरत में सहायता नहीं कर सकता, अतः इस प्रकार का विश्वास आपकी आत्मा को उद्धार नहीं दे सकता। जिस

प्रकार ऐसा विश्वास जरूरतमन्द व्यक्ति के लिए कुछ नहीं करता, उसी प्रकार, ऐसा विश्वास, तथाकथित विश्वास, आपकी आत्मा के लिए भी कुछ नहीं करता।

वे लोग जो मसीही होने का दावा करते हैं लेकिन निर्धन साथी विश्वासियों की सहायता करने में असफल हो जाते हैं उन्होंने वास्तव में उद्धार नहीं पाया **है।** आप इससे बाहर निकलने का मार्ग खोजने के लिए इस पद के चारों और चक्कर लगा सकते हैं, लेकिन यहाँ यह चमकीला सत्य है। जो किसी जरूरतमन्द भाई या बहन को ऐसा जवाब देता है उसमें स्पष्टतः विश्वास नहीं है। यही बात 1यूहन्ना 3:17 कहता है, *"पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है?"* आशय है कि उसमें परमेश्वर का प्रेम नहीं हो सकता, क्योंकि यदि परमेश्वर का प्रेम उसमें होता तो वह फल लाता। लेकिन चूंकि उसमें कोई फल नहीं है यह बिल्कुल वही है जो हमने पिछले सत्य में देखा। चूंकि कोई फल नहीं है–फल कंगालों के प्रति दया है–चूंकि कोई फल नहीं है तो यह स्पष्ट प्रमाण है कि विश्वास नहीं है। अब मैं यहाँ बहुत सावधान रहना चाहता हूँ; मैं चाहता हूँ आप यहाँ दो प्रकार के सत्यों को देखें जो निर्णायक हैं, इसे समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

पहला, <u>दया के कार्य उद्धार के साधन नहीं हैं।</u> हम उद्धार पाने के लिए कंगालों की सहायता नहीं करते हैं। उद्धार का माध्यम क्या है? मसीह में परमेश्वर की दया और अनुग्रह उद्धार का माध्यम है। यह उद्धार का एकमात्र माध्यम है।

और याकूब हमें पहले ही यह दिखा चुका है। याकूब 1:17–18 में याद है उसने क्या कहा? *"क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।"* पद 18, *"उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया।"* यही अनुग्रह है। परमेश्वर ने, अपनी पहल के द्वारा, हमें उत्पन्न किया है। उसने हमें जीवन दिया है। हमारे अन्दर वचन बोया है, पद 21 में, हमें उद्धार दिया है। परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा जो हमारे अन्दर है हमें जीवन दिया है। एक बार मरने के बाद, कौन जी उठने का निर्णय ले सकता है? कोई नहीं। जीवन देना पड़ता है। यही वह तस्वरी है जिसे याकूब हमारे सामने रखता है। परमेश्वर की दया उद्धार का माध्यम है।

मैं चाहता हूँ आप एक पल के लिए इसके बारे में सोचें। मैं चाहता हूँ आप अपने जीवन में परमेश्वर की तेजोमय, अनुग्रहकारी दया के बारे में सोचें। आपका जन्म एक ऐसे सन्दर्भ में हुआ जहाँ आपका सामना यीशु

मसीह के सुसमाचार से हुआ। इस संसार में एक अरब लोग हैं, एक अरब से भी अधिक, जो आज ऐसा नहीं कह सकते हैं। आपका जन्म एक ऐसे सन्दर्भ में हुआ जहाँ आपका सामना यीशु मसीह के सुसमाचार से हुआ। मैं इसे एक कदम आगे ले जाऊँगा–केवल आत्मिक रूप में नहीं, बल्कि शारीरिक रूप में। आपका जन्म एक ऐसे सन्दर्भ में हुआ जहाँ, शेष संसार की तुलना में, शुद्ध जल और भोजन की आपूर्ति बहुतायत से है। हम कहते हैं, "मैं भूख से मर रहा हूँ।" हमें पता ही नहीं कि यह क्या है। हम ऐसे स्थान पर जन्मे हैं जहाँ भोजन और शुद्ध जल की बहुतायत है। एक ऐसे सन्दर्भ में जन्मे जहाँ आपने सुसमाचार सुना और शुद्ध जल तथा भोजन से घिरे हैं, और बहनो और भाइयो, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि आपका उस से कोई संबंध नहीं था। आप इस सन्दर्भ में केवल परमेश्वर के अनुग्रह और उसकी दया से जन्मे थे। अतः उसकी दया उद्धार का माध्यम है, न कि हमारे दया के कार्य। हमारे दया के कार्य उद्धार पाने का माध्यम नहीं हैं। और अन्तर यह हैः दया के कार्य उद्धार का माध्यम नहीं हैं, लेकिन दया के कार्य उद्धार का अनिवार्य प्रमाण हैं।

वे उद्धार का स्वाभाविक परिणाम हैं। अब हम इसके बारे में अगले प्रचार में अधिक बात करेंगे जब हम याकूब को देखेंगे और उसकी तुलना पौलुस से करेंगे, परन्तु यहाँ इतना कहना पर्याप्त है कि जब याकूब कार्यों के बारे में बात करता है, तो वह अक्सर पौलुस के कार्यों के बारे में बात करने के तरीके से बहुत अलग तरह से बात करता है। इस पूरे परिच्छेद में जब भी याकूब कार्यों के बारे में बात करता है, तो वह परमेश्वर के सामने अनुग्रह को पाने के अर्थ में कार्यों के बारे में बात नहीं करता है। वह परमेश्वर पर विश्वास के फल के रूप में कार्यों की बात करता है। यह एक बड़ा अन्तर है। वह कार्यों को इस प्रकार नहीं बताता है जो हम परमेश्वर के अनुग्रह को पाने के लिए करते हैं। वह कार्यों की फल के रूप में बात कर रहा है, जैसे हमने देखा परमेश्वर में विश्वास का फल। और वह कह रहा है निर्धन के प्रति दया हमारे दिलों में परमेश्वर की दया का प्रमाण है। यदि परमेश्वर की दया और सुसमाचार ने तुम्हारे हृदयों को रूपान्तरित किया है, तो आप किसी जरूरतमन्द को देखकर कुछ किए बिना नहीं रह सकते। यह असंभव है! दया आपसे बहती है। यह उसका प्रमाण है जो आपके हृदय में है, ठीक उसी प्रकार जैसे सेब सेब के पेड़ का प्रमाण हैं।

टिम केलर, न्यूयॉर्क शहर में एक बड़ी कलीसिया के पासबान उस शहर और संसार भर में दया सेवकाई करते हैं। मुझे उनका यह कथन पसन्द है। उन्होंने कहा, "मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ण सीमा तक दया एक मसीही का ऐसा अनिवार्य चिन्ह है कि इसका सच्चे विश्वास की परख के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। दया एक मसीही के लिए वैकल्पिक योग नहीं है। बल्कि, दया के कार्यों में उण्डेला गया जीवन

सच्चे विश्वास की निशानी है। यदि जरूरतमन्द के प्रति कोई दया नहीं है, तो विश्वास नहीं है। दया के कार्य उद्धार का प्रमाण हैं।" आप जानना चाहते हैं यह सबसे स्पष्ट कहाँ है? मेरे साथ मत्ती 25 पर चलें। सुसमाचारों की तरफ चलें। पहला सुसमाचार, मत्ती 25, पद 31 को देखें। मेरा अनुमान है कि यह परिच्छेद आप में से बहुतों के लिए परिचित है। यहाँ पर यह सर्वाधिक स्पष्ट है। मत्ती 25:31, भविष्य में होने वाले न्याय के बारे में एक परिच्छेद, और यीशु यहाँ बात कर रहे हैं। सुनें क्या होता है।

मत्ती 25:31. यहाँ यह पूर्णतः स्पष्ट है कि मसीह पर विश्वास कंगालों के प्रति दया का फल लाता है, और यदि कंगाल के प्रति दया नहीं है, तो इसका अर्थ है कि स्पष्टतः मसीह में कोई विश्वास नहीं है। पद 31 में देखें, *"जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा।"* पद 32, *"और सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा। तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।"* (मत्ती 25:32–34).

यहाँ ठहरें। यही दया है। यही अनुग्रह है। क्या आपने सुना? *"हे मेरे पिता के धन्य लोगो।"* "जगत की आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया राज्य।" इसी की गूँज इफिसियों 1 में है। जगत की उत्पत्ति से पहले, हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों; यही तस्वीर है। अनुग्रह और दया। अब मैं चाहता हूँ आप देखें कि कैसे यह दया उनके कार्य में अभिव्यक्त होती है। पद 35 में, अब मैं आपको उत्साहित करूँगा कि जहाँ भी आप "मैं" को देखें उस पर निशान लगाएँ। यीशु कह रहे हैं। *"क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया; मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े पहनाए; मैं बीमार था, और तुमने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, और तुम मुझसे मिलने आए।"* (मत्ती 25:35–36).

*"तब धर्मी उसको उत्तर देंगे, 'हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या प्यासा देखा और पानी पिलाया? हमने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया? या नंगा देखा और कपड़े पहनाए? हमने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझसे मिलने आए?' तब राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ*

*किया।'"* (मत्ती 25:37–40). वाह! क्या आपने सुना? यीशु कहते हैं कंगाल और निर्धन के प्रति आपका प्रत्युत्तर बिल्कुल इस प्रकार था जैसे कि आप उसको प्रत्युत्तर दे रहे थे।

इसके बारे में सोचें। यदि आप यीशु को भूखा देखते, तो क्या आप उन्हें भोजन खिलाते? यदि आप यीशु को प्यासा देखते, तो क्या आप उन्हें पानी पिलाते? हाँ! बिल्कुल। यदि नहीं, तो बहुत से सवाल उत्पन्न हो जाते कि हम मसीही हैं या नहीं, ठीक? और यीशु कह रहे हैं जो तुमने इन छोटे से छोटे भाइयों के लिए किया है वह उसका प्रतिबिम्ब है जो तुम मेरे साथ करते हो। कितनी ताकतवर तस्वीर है। प्रेरणास्पद रूप में ताकतवर है जब हम कंगाल में मसीह के बारे में सोचते हैं, लेकिन फिर विपरीत तस्वीर। पद 41,

> *तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को नहीं दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया; मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाए; मैं बीमार और बन्दीगृह में था, और तुमने मेरी सुधि न ली।' तब वे उत्तर देंगे, 'हे प्रभु, हमने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की?' तब वह उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।' और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।*

जो निर्धन को अनदेखा करते हैं वे मानो स्वयं मसीह को अनदेखा करते हैं, और जो मसीह को अनदेखा करते हैं वे दिखाते हैं कि मसीह उनके दिलों में वास्तविक नहीं है, और उनकी नियति अनन्त आग है।

इससे न चूकें। यीशु या याकूब यह नहीं कह रहे हैं, "उद्धार पाने के लिए अच्छे कार्य करो, दया के कार्य करो।" यीशु और याकूब कह रहे हैं, "जब मसीह आपके दिल में है, तो दया के कार्य उन लोगों के लिए बहेंगे जो आपके आस–पास जरूरत में हैं," इसी कारण हम यह सत्य कह सकते हैं, कि यदि आप निर्धन विश्वासियों की परवाह नहीं करते हैं तो वास्तव में आपने उद्धार नहीं पाया है।

यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है, यह तथ्य कि हम दया के कार्य उद्धार के माध्यम के रूप में नहीं बल्कि परिणाम के रूप में, हमारे उद्धार के प्रमाण के रूप में करते हैं, क्योंकि यहीं पर हमें व्यवहारिक रूप से यह अहसास होता है कि हमारा कंगालों को देना ग्लानि से प्रेरित नहीं है। मेरे पीछे आएँ।

हमारा कंगालों को देना ग्लानि से प्रेरित नहीं है, जैसे कि हम ये सब कुछ पाने के लिए कर रहे हों। नहीं, मसीह के अनुयायियों के रूप में हम ग्लानि से प्रेरित नहीं है; हम सुसमाचार से, मसीह की सामर्थ से, मसीह में विश्वास से प्रेरित हैं जब वह हम में रहता है तो यह हमारे दिलों का बहाव है कि हम कंगालों को देने के लिए विवश होते हैं। लेकिन यह दायित्व नहीं बल्कि आनन्द है। जहाँ हम कंगालों को देने का आनन्द लेते हैं, क्योंकि इसी तरह हम स्वयं मसीह को देने का आनन्द लेते हैं। मुझे वह पसन्द है जो स्पर्जन ने मत्ती 25 में इस परिच्छेद के बारे में कहा है। वे कहते हैं, "उन्होंने भूखों को खिलाया, नंगों को पहनाया, बीमारों से मिलने गए। क्यों? मसीह की खातिर, क्योंकि संसार में मसीह के लिए कुछ भी करना सबसे मधुरतम बात थी। उन्होंने ऐसा किया क्योंकि वे ऐसा करने से आनन्दित थे; क्योंकि वे इसे करने से रूक नहीं पा रहे थे; क्योंकि उनके नये स्वभाव ने उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया।" यह विश्वास का फल है : कंगाल के प्रति दया।

अब यह अन्तिम सत्य के लिए आधार तैयार करता है, पुनः एक अर्थ में, वही यथार्थ, लेकिन अलग तरीके से अभिव्यक्त। हमारे हृदयों का विश्वास हमारे जीवनों के फल से प्रकट होता है। जो मसीही होने का दावा करते हैं परन्तु निर्धन साथी विश्वासियों की सहायता नहीं करते उन्होंने वास्तव में उद्धार नहीं पाया है।

**अन्तिम रूप में, कर्मरहित विश्वास व्यर्थ विश्वास है**

तीसरा सत्यः अन्तिम रूप में, कर्मरहित विश्वास व्यर्थ विश्वास है। याकूब इस वार्तालाप को जारी रखता है और वह एक काल्पनिक व्यक्ति को अन्दर लाता है जो कहता है, "ठीक है। तुम कार्य करते हो। मेरे पास विश्वास है।" और वह दोनों को एक–दूसरे से अलग करने का प्रयत्न करता है। कुछ लोगों में दया है, कुछ में नहीं। कुछ लोग कार्य करते हैं, कुछ नहीं। और याकूब कहता है, "नहीं। आप इन दोनों को अलग नहीं कर सकते। मैं कार्य के द्वारा अपना विश्वास दिखाऊँगा।" और फिर वह पद 20 पर आता है, याकूब 2:20 पर, और जो उसने अभी कहा है उस पर पुनः बल देता है। और हम अगले संदेश में इसे विस्तार से देखेंगे, लेकिन उसने कहा, *"पर हे निकम्मे मनुष्य, क्या तू यह भी नहीं जानता कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है?"* (याकूब 2:20). यह व्यर्थ है। यदि आप में इस प्रकार का विश्वास है, तो इससे क्या लाभ?

इससे उस भाई या बहन को कोई लाभ नहीं जो जरूरत में है। इससे उन्हें क्या लाभ होता है? इससे उन्हें कोई लाभ नहीं, और इससे तुम्हें कोई लाभ नहीं, क्योंकि यह तुम्हारी आत्मा का उद्धार नही करता। यह व्यर्थ विश्वास है। यह कुछ भी नहीं—बेकार है। यह मरा हुआ है। और यहीं पर याकूब सारी बातों को अत्यधिक स्पष्ट करता है। वह कहता है विश्वास केवल बौद्धिक सहमति नहीं है। "तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर है?" और हर एक अच्छे यहूदी पुरूष या स्त्री शेमा—व्यवस्थाविवरण 6:4 को जानते थेः *"हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।"* उसने कहा, "अच्छी बात है, दुष्टात्मा भी यह विश्वास करती है।"

अतः आपने कहा, "मैं इस पर विश्वास करता हूँ," परन्तु उन सारी बातों को सोचें जिन पर दुष्टात्माएँ विश्वास करती हैं। दुष्टात्माएँ परमेश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करती हैं। दुष्टात्माएँ मसीह के देवत्व पर विश्वास करती हैं। दुष्टात्माएँ स्वर्ग और नरक के होने पर विश्वास करती हैं। दुष्टात्माएँ विश्वास करती हैं कि मसीह अनन्त न्यायी है। दुष्टात्माएँ विश्वास करती हैं कि केवल मसीह ही उद्धार देने में सक्षम है। दुष्टात्माएँ इन सारी बातों पर विश्वास करती हैं। मुझे डर है कि ऐसे असंख्य पुरूष और महिलाएँ हैं जिन्होंने आत्मा को दोषी ठहराने वाले विश्वास को अपनाया है जो परमेश्वर और मसीह के सत्य की केवल बौद्धिक सहमति से निर्मित है। मेरा अनुमान है कि ऐसे लोग हैं जिनका परमेश्वर के बारे में सही विचार है, लेकिन विश्वास नहीं है जो उनका उद्धार कर सके।

यह केवल बौद्धिक सहमति नहीं है। दूसरा, यह केवल एक भावनात्मक प्रत्युत्तर नहीं है। केवल बौद्धिक नहीं, दुष्टात्माओं के समान; न ही यह भावनात्मक है। "दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और" क्या? "थरथराते हैं।" वे काँपते हैं। वे परमेश्वर के यथार्थ से भावनात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। विश्वास केवल एक भावनात्मक प्रत्युत्तर नहीं है। मुझे नहीं पता हम में से कितने लोगों ने अपनी अनन्त सुरक्षा, विश्वास की हमारी समझ को, किसी विशेष पल में अपनी भावनाओं पर आधारित किया है? "मुझे यह महसूस होता है, या वह महसूस होता है।" विश्वास केवल बौद्धिक सहमति नहीं है, और विश्वास केवल भावनात्मक प्रत्युत्तर नहीं है। आप में ये दोनों होने के बावजूद आप दुष्टात्माओं के साथ एक ही धरातल पर हो सकते हैं। विश्वास में इच्छापूर्ण आज्ञापालन शामिल है—यही बिन्दू है। आप विश्वास को जानते हैं, आप विश्वास दिखाते हैं, केवल अपने विचार या भावना के द्वारा नहीं, बल्कि अपने कर्म के द्वारा। विश्वास कार्य करता है।
अब, मैं यह नहीं कह रहा हूँ, और याकूब यह नहीं कह रहा है, कि हम अपने मनों में जो विश्वास करते हैं, अपने दिलों में जो महसूस करते हैं, वह महत्वपूर्ण नहीं है। हमारी भावनाएँ, हमारी बुद्धि, इस तस्वीर में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। परन्तु यदि विश्वास उन दो क्षेत्रों तक सीमित है और इच्छापूर्ण आज्ञापालन को

टालता है, तो यह विश्वास नहीं है। यह विश्वास नहीं है। विश्वास कार्य करता है। और यदि यह कार्य नहीं करता, तो यह मरा हुआ है। यही सत्य है। हमारे दिलों का विश्वास हमारे जीवनों के कार्यों से प्रकट होता है। जो लोग मसीही होने का दावा करते हैं और निर्धन साथी विश्वासियों की सहायता करने में असफल हो जाते हैं उनका वास्तव में उद्धार नहीं हुआ है। दया के कार्य उद्धार के माध्यम नहीं हैं बल्कि उद्धार का प्रमाण, परिणाम हैं। अन्तिम रूप में कर्मरहित विश्वास, व्यर्थ विश्वास है। विश्वास केवल बौद्धिक सहमति या भावनात्मक प्रत्युत्तर नहीं है; यह इच्छापूर्ण आज्ञापालन है। यह विश्वास कार्य करता है।

**परिस्थिति...**

**संसार में एक अरब से अधिक लोग प्रतिदिन 1 डॉलर से भी कम पर जीवनयापन करते हैं**

और विश्वास करने वालो, यह वह परिस्थिति है जिसे मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ। संसार में एक अरब से अधिक लोग प्रतिदिन 1 डॉलर से भी कम पर जीवनयापन करते हैं। इस संसार में एक अरब से भी अधिक लोग हैं जो अत्यधिक निर्धनता में जी रहे हैं। मैं जानता हूँ इसे समझना हमारे लिए कठिन है, विशेष रूप से तब जब हमने अपने आस–पास, अपने समुदाय में ऐसी किसी परिस्थिति को नहीं देखते हैं। अतः मैं आपके सामने कुछ आँकड़ों को रखना चाहता हूँ जो आपको थोड़ी जानकारी दे सकते हैं।

विश्व बैंक के अनुसार, चार आय वर्गों में विभाजित–यह पूर्णतः आय के बारे में है–जो संसार में कम आय कमाने वाले लोग प्रतिवर्ष 825 डॉलर से भी कम कमाते हैं: जो संसार का 37 प्रतिशत हैं। यानि ढ़ाई अरब लोग ऐसे हैं जो एक वर्ष में 825 डॉलर से भी कम कमाते हैं। निम्न–मध्यवर्गीय आय–3000 डॉलरः संसार का 38 प्रतिशत। इन दोनों को जोड़ दें, 5 अरब लोग एक वर्ष में 3000 डॉलर या उससे भी कम कमाते हैं। 5 अरब! यह संसार का बहुसंख्यक भाग है। और हम कई बार उच्च–मध्यम वर्ग की बात करते हैं। आइए देखें संसार में उच्च–मध्यम वर्ग क्या है, प्रतिवर्ष 3000–10,000 डॉलरः संसार का 9 प्रतिशत। 9 प्रतिशत! और यह सब संसार के सबसे धनी लोगों की ओर ले जाता है, उच्च आय वाले लोग जो प्रतिवर्ष 10,000 डॉलर से अधिक कमाते हैं: 16 प्रतिशत। अतः यदि आपकी या आपके परिवार की आय 10,000 डॉलर प्रतिवर्ष से अधिक है–यह केवल आय पर आधारित है–तो आप संसार के सबसे धनी 16 प्रतिशत लोगों में से हैं।

यदि आप इसे एक और स्तर ऊपर ले जाएँ, यदि आपकी आय 25,000 डॉलर प्रतिवर्ष है तो यह आपको संसार के सबसे धनी 10 प्रतिशत लोगों में स्थान देता है। 25,000 डॉलर आपको संसार के सबसे धनी 10

प्रतिशत लोगों में स्थान देता है। और फिर यदि आप इसे एक और स्तर ऊपर 50,000 डॉलर प्रतिवर्ष पर ले जाएँ, यदि आपकी आय 50,000 डॉलर प्रतिवर्ष है तो आपका स्थान संसार के सर्वाधिक धनी 1 प्रतिशत लोगों में है। सबसे धनी 1 प्रतिशत। अब यहाँ मैं वास्तव में सावधान रहना चाहता हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ ऐसे भाई और बहनें हैं जो वर्तमान बाजार की अवस्था, वर्तमान अर्थव्यवस्था की स्थिति के कारण संघर्ष कर रहे हैं, और सोच रहे हैं कि सप्ताह–दर–सप्ताह या दैनिक आधार पर क्या किया जाए। इसलिए मैं किसी भी तरह से इसके प्रति संवेदनाहीन नहीं होना चाहता हूँ।

साथ ही, यह स्पष्ट है कि हम संसार के सबसे धनी लोगों में हैं। शेष संसार की तुलना में हमारे पास अपार संपत्ति है। इतने धन, इतने संसाधन हमारे पास हैं जो अधिकाँश संसार के पास नहीं है। और हम अत्यधिक आवश्यकता से घिरे हैं। और यह अन्तिम आँकड़ा है जो मैं आपके सामने रखन वाला हूँ, अत्यधिक आवश्यकता की एक तस्वीर। प्रतिदिन 26,000 से अधिक बच्चों की भूख या निवारणीय रोगों के कारण मृत्यु हो जाती है। अब यह आपके अन्दर बैठने पाए; आज 26,000 से अधिक बच्चों की मृत्यु हो जाएगी क्योंकि उनके पास भोजन नहीं है या उन्हें कोई ऐसा रोग है जिसका उपचार किया जा सकता था–मलेरिया, दस्त से बच्चों की मौत। मैं ने इसे अपने जीवन में डाला और ये मेरे अपने दो बेटों के 26,000 संस्करण हैं। इसे अपने परिवार में रखें। इसे अपने समुदाय में रखें। हम अपने समुदाय में बच्चों की जरूरतों के बारे में बात कर रहे हैं। वास्तविकता यह है कि यदि यह हमारे आस–पास के वृहद् समुदाय की स्थिति होती, तो दोपहर तक हमारे समुदाय के सारे बच्चों की मृत्यु हो जाती। सब की।

*"यदि कोई भाई या बहन नंगे–उघाड़े हो और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो, और तुम में से कोई उनसे कहे, 'कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो,' पर जो वस्तुएँ देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे तो क्या लाभ?"* (याकूब 2:15–16). मैं ने इन सत्यों को और इस परिस्थिति को आपके सामने इसलिए नहीं रखा है कि आप पर दोष लगाऊँ, बल्कि आप में विश्वास उत्पन्न करने के लिए, ताकि आप परमेश्वर की दया को देख सकें। कि मैं, हम सब एक साथ अपने अन्दर परमेश्वर की दया को देखें, और उसकी दया हमारे अन्दर फल उत्पन्न करे।

**चुनौती...**

**निर्णायक प्रयोग**

अतः आज एक पासबान के रूप में मैं आपको चुनौती देना चाहता हूँ, ऐसी चुनौती जिसे मेरी जानकारी में हमने अब तक अनुभव नहीं किया है। मैं इसे निर्णायक प्रयोग कहूँगा। बात यह है। बजट का समय आ रहा है, और यदि मैं ईमानदारी से कहूँ, तो यह एक पासबान के रूप में मेरे लिए वर्ष का सबसे बुरा समय है, क्योंकि जब भी हम वर्ष के इस बिन्दू पर पहुँचते हैं तो हमारा सामना इस वास्तविकता से होता है कि हम, उसकी कलीसिया अब भी इस संसार की आवश्यकताओं के विपरीत, अपने आप पर और अपनी प्राथमिकताओं पर और अपनी इच्छाओं पर खर्च कर रही है। और हम इन पिछले वर्षों में इस बजट में बदलाव लाने के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहे हैं, और परमेश्वर के अनुग्रह से मैं नेतृत्व के लिए, इस देह के स्टाफ के लिए परमेश्वर की स्तुति करता हूँ जिन्होंने त्याग किया है। जिन्होंने कुछ दूसरी बातों के लिए धन को मुक्त करने के लिए कुछ कठिन निर्णय लिए हैं।

हमने अच्छे बदलाव किए हैं, परन्तु मेरा विश्वास है कि आने वाले दिनों में हम अपने विश्वास को और अधिक गहराई से कार्य में ढ़ाल पायेंगे। पिछले वर्ष जब हम निर्णायक श्रंखला से गुजर रहे थे, मरकुस 10:17–31, धनी युवक की कहानी, हमने विचार किया था कि अपने खर्च पर लगाम लगाने से क्या होगा? क्या होगा यदि हम आवश्यकताओं और विलासिता के बीच जितना संभव हो सके उतना अन्तर करें, और अपने खर्च पर लगाम लगाएँ? और उस लगाम से ऊपर परमेश्वर हमें चाहे जो भी सौंपे, छोटा या बड़ा, हम देने के लिए मुक्त होंगे, परमेश्वर की महिमा के लिए उसकी कलीसिया और खोए हुओं तथा निर्धनों के लिए।

एक बात जो मैंने और मेरे परिवार ने पिछले वर्ष के दौरान सीखी है कि कुछ देना तब आसान होता है जब आपको उससे मिलने वाले लाभ की जानकारी हो। बलिदान करना तब आसान होता है जब आपको उस बलिदान के परिणामस्वरूप मिलने वाले लाभ के बारे में पता हो। अतः मैं सोचने लगा। हम चर्चा करने लगे, यदि हमारी कोई व्यवहारिक आवश्यकता हो जिसे हम उस प्रत्येक डॉलर से पूरा कर सकें जिसे हम बचा सकते हैं या त्याग सकते हैं, तो क्या होगा? इन वास्तविकताओं के प्रकाश में, क्या हो यदि आप 100 डॉलर में एक वर्ष तक उन कुपोषित बच्चों को भोजन खिला सकें? यदि ऐसा है, तो क्यों न हम अपने बजट के बारे में बात करते समय पूछें, "क्या हमारे लिए इस पर धन खर्च करना अच्छा है या एक बच्चे पर जिसके पास पूरे साल खाने के लिए कुछ नहीं हैं?" और हम कहने लगे, "हम अपनी लालसाओं और इच्छाओं को उस बात के लिए बलिदान करेंगे जिसके बारे में परमेश्वर ने साफ कहा है कि वह उसके दिल के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।" इसके परिणामस्वरूप क्या हो सकता है? इससे परमेश्वर की महिमा के लिए खोए हुओं को जीतने और निर्धनों की सहायता के लिए अपने संसाधनों को देने में हमें सहायता मिलेगी। और

चुनौती यह है – 2010 के निर्णायक प्रयोगः अपने चारों ओर के संसार की आत्मिक और भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपना जीवन देने हेतु एक वर्ष तक अपने धन का बलिदान करना।

प्रत्येक शब्द महत्वपूर्ण है। अपने चारों ओर के संसार की आत्मिक और भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपना जीवन देने हेतु एक वर्ष तक अपने धन का बलिदान करना। यहाँ मेरे साथ बने रहें। एक वर्ष के लिएः स्पष्ट, स्थापित समय सीमा। अब मैं इस पर इसलिए बल दे रहा हूँ क्योंकि कुछ बातें, कुछ खर्चे ऐसे हैं जिन्हें आप एक वर्ष के लिए स्थगित कर सकते हैं लेकिन 20 वर्षों तक स्थगित नहीं कर सकते हैं। अतः हम स्पष्ट, स्थापित समय सीमा की बात कर रहे हैं। एक वर्ष के लिए हम उन सारी वस्तुओं का बलिदान करें जो हमारी प्राथमिकताओं और हमारी इच्छाओं और हमारी लालसाओं को आकर्षित करती हैं। एक वर्ष के लिए कलीसिया में मसीहियों के रूप में हम यह सब बलिदान करें, उसे अलग करें, स्वयं के लिए मरें, और कहें, "इस वर्ष हम निर्णायक बलिदान करेंः प्रत्येक संभव डॉलर।"

किसी भी और हर जगह जहाँ कहीं हम बचा सकते हैं, बचाएँ। केवल प्रचुरता ही नहीं, जिन वस्तुओं की हमें वैसे भी जरूरत नहीं है। यह बलिदान नहीं है। बलिदान वह है जिसे करने में दर्द होता है। हमारी क्षमता के अनुसार नहीं, बल्कि क्षमता से बढ़कर देना। प्रत्येक संभव डॉलर को आवश्यक, विशेष जरूरत के लिए खर्च करना। एक आवश्यकता को पहचान कर, जैसे कि मैं ने अभी बताया, यह कहना, "क्या हम थोड़ी मात्रा एक बच्चे के लिए अगले वर्ष भोजन उपलब्ध करवा सकते हैं?" बजट को देखें और सवाल करें, "क्या इसे करना हमारे लिए बच्चों को भोजन खिलाने से अधिक महत्वपूर्ण है?"

**दो मार्ग...**

मैं दो भिन्न मार्गों की बात कर रहा हूँ। एक कलीसिया के रूप में। ब्रूक हिल्स की कलीसिया के लिए यह कहना, "एक साल के लिए हम कलीसियाई संस्कृति की आत्म–केन्द्रित, आत्म–मनोरंजक रीति को बदलने जा रहे हैं। हम बलिदान करने वाले हैं, स्वयं के लिए मरने वाले हैं, और कलीसिया के रूप में हम अपने धन को परमेश्वर की महिमा के लिए अपने विश्वास को जीयेंगे। इसे करने के लिए, हम अपनी जीवनशैली और कलीसिया के स्वरूप के बारे में अपनी अपेक्षाओं का भी त्याग करने वाले हैं। हम उसका त्याग करने वाले हैं ताकि परिवार तृप्त रहें और जी सकें।"

और फिर व्यक्तियों और परिवारों के रूप में, क्या हो यदि कलीसिया के व्यक्ति और परिवार अगले वर्ष व्यक्तिगत रूप से वह करें जिसे हम कलीसिया के रूप में एक साथ सामूहिक रूप से करने वाले हैं। क्या

हो यदि हम अपने दैनिक खर्च को अपने चारों तरफ के संसार की अत्यावश्यक, वास्तविक जरूरत के लेन्स से देखना आरम्भ करें? और हम सबने कहा, "अपने जीवनों में एक वर्ष के लिए हम अत्यधिक उदारता से खर्च करेंगे ताकि हम अपने जीवनों को मसीह के नाम में गरीबों की खातिर खर्च कर सकें।" यदि हम अपनी जीवनशैलियों और कलीसिया की रीति को एक वर्ष के लिए पूर्णतः बदल दें तो क्या हो सकता है?

मैं ने इसे पुरनियों से बाँटा, और पुरनियों के साथ हमने इसके बारे में चर्चा की। जब हम इसके बारे में बात कर रहे थे, प्रार्थना कर रहे थे, और इसके बारे में सोच रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने सामर्थी रीति से उस सभा का नियंत्रण लिया, और भाइयों ने कहा, "हाँ, हम यही चाहते हैं। हमें यह करना है।" परन्तु वहाँ हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कलीसिया के रूप में इसे करने के लिए, पूरी कलीसिया की जरूरत होगी। इसमें हम सब को कलीसिया के रूप में एक साथ कहना होगा, "हम इसे करना चाहते हैं।"

इस पर बल देने का कारण यह है कि मुझे निश्चय है कि कुछ ऐसा करने के लिए हमें इस देह में इतनी अधिक एकता और एकीकृत ध्यान की आवश्यकता होगी जितनी आज से पहले कभी नहीं थी। क्योंकि मुझे निश्चय है कि विरोधी हर मोड़ पर इसको होने से रोकने का प्रयत्न करेगा, और हर मोड़ पर विरोधी हमारी आँखों को महत्वपूर्ण बात से हटाकर उन पर लगाने का प्रयत्न करेगा जो हमारी इच्छा और लालसा है और जो हमें आकर्षित करता है। मेरा विचार है कि इसमें शामिल आत्मिक युद्ध बहुत विशाल है, और इसलिए इसके लिए जरूरी है कि हम सब मिलकर परमेश्वर की ओर निहारें।

मैं निर्धनों पर एकीकृत ध्यान नहीं चाहता क्योंकि यह इससे बढ़कर है। मैं निर्धन में और उन दिलों में मसीह की महिमा पर एकीकृत ध्यान चाहता हूँ जो कहते हैं, "हम उसे भोजन खिलाना चाहते हैं। हम उसे वस्त्र पहनाना चाहते हैं। हम उसकी सेवा करना चाहते हैं। अपनी सेवा के द्वारा हमारे दिलों में उसने विश्वास को उत्पन्न किया है। हम केवल वचन को सुनने वाले बनकर अपने आप को धोखा नहीं देना चाहते। हम उसको करना चाहते हैं। हम उसके पीछे दौड़ना चाहते हैं।" और मेरा विचार है कि उस पर इस प्रकार का एकीकृत ध्यान कलीसिया को चलाने की हमारी रीति को बदल देगा।

और आज मैं आपको दो प्रकार से निमंत्रण देना चाहता हूँ। मैं व्यक्तियों और परिवारों के रूप में आपको निमंत्रित करना चाहता हूँ कि आप प्रार्थना करना शुरू करें, अपने जीवन में और अपने पारिवारिक जीवन में इसे करने के बारे में सोचें। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि मैं या हम में से कोई भी जानता है कि इस सबका

क्या अर्थ है। लेकिन मैं आपको चुनौती देना चाहता हूँ कि प्रार्थना करना आरम्भ करें और सोचना शुरू करें कि एक वर्ष अपने जीवन में और अपने परिवार में इसे करना आपके लिए कैसा रहेगा।